

Padma Shri



SHRI KHANDU WANGCHUK BHUTIA

Shri Khandu Wangchuk Bhutia is a master craftsman specialized in the art of Thangka Painting (Tibetan scroll painting). He is widely known and respected as a teacher and an artist of the craft. His contributions have been influential in the preservation of the art in the Himalayan regions.

2. Born on 13th May, 1959, in a hamlet village of Sakyong, West Sikkim, Shri Wangchuk developed an interest to the arts at the early age, inspired by his father, H.E Dunzin Rimpoche. He was eventually taken under the care of his teachers, late Shri Phuntsok Sangpo and late Shri Zapa Acho, who were well known artists of their time. He started training in the ancient art at the age of 15 and in the coming years evolved into an artist of his own right, developing a unique style and became proficient in the Thangka Arts.

3. Shri Wangchuk, however didn't keep the knowledge confined to himself and he started a training centre in the year 1982, where he taught students (commonly poor, spoiled children) the art with free accommodation and fooding. Till date, he has taught around 350 students. His Thangkas are highly appreciated and recognized by well known high learned Lamas of Buddhism. His paintings can be found in various major Dharma centres in North America, Europe and Asia affiliated to H.H. Dudjom Rimpoche. His name also features in some publications among outstanding personalities of India, some of which are, Reference India, Vol. 2 Biographical notes of man and woman of Achievement of Today and Tomorrow 1993, and Indo American Whose Vol. I published by FI Publications, Delhi, India 1994.

4. Shri Wangchuk has displayed his excellence in the arts in the form of large Buddhist murals in monasteries in Sikkim namely, Gnadak Monastery (Namchi); Pemayangtse Monastery (Pelling); Tashi Choling Monastery (Khechuperi); Allay Gumpa (Ravangla); Boomtar Tamang Monastery (Namchi). Outside of Sikkim, he has painted the buddhist murals in Tashi Choling Monastery in Hanle, Ladakh. He has worked in the Swayambu and Boudha in Nepal, where he took students from Sikkim for experience. Other places in Nepal includes Dudjom Gumpa, Tinchulae Gumpa, Manang gumpa. He has participated in various great exhibitions nationally like the Surajkand Mela 2006, India International Trade Fair, Delhi Haat, TRIFED exhibitions. He also represented India and the art in Jeddah International Trade Fair (EPCH) 2014 and Made in North East India II in Thailand.

5. Shri Wangchuk was conferred the National Award (handicraft) in 1981 by the then President, Dr Neelam Sanjiva Reddy, which helped him in his path of preserving the art. He was also conferred the title of Kala Nidhi at Surajkand Mela 2006. Besides he has been given other recognitions like the Bharat Excellence Award in 2001.

पद्म श्री



श्री खांडू वांगचुक भूटिया

श्री खांडू वांगचुक भूटिया, थंगका चित्रकारी कला (तिब्बती स्कॉल पेंटिंग) के पारंगत शिल्पकार हैं। वह एक शिक्षक और शिल्प कलाकार के तौर पर विख्यात और प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। हिमालयी क्षेत्रों में कला के संरक्षण में उनका योगदान प्रभावशाली और सराहनीय रहा है।

2. 13 मई, 1959 को पश्चिम सिक्किम के साकयोंग गांव में जन्मे, श्री वांगचुक की, अपने पिता एच. ई. डनज़िन रिंपोचे से प्रेरित होने पर कम आयु में ही कला के प्रति रुचि पैदा हो गई थी। इसके बाद, तत्कालीन प्रसिद्ध कलाकार स्वर्गीय श्री फुंत्सोक सांगपो और स्वर्गीय श्री जपा अच्छो की देखरेख में उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। उन्होंने 15 वर्ष की आयु में प्राचीन कला का प्रशिक्षण लेना शुरू किया और आने वाले वर्षों में एक अग्रणी कलाकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। अपनी अनूठी शैली तैयार करते हुए, थंगका कला में निष्णात हो गए।

3. तथापि श्री वांगचुक ने ज्ञान को अपने तक सीमित नहीं रखा और उन्होंने वर्ष 1982 में एक प्रशिक्षण केंद्र शुरू किया, जहां उन्होंने छात्रों (आमतौर पर गरीब और बिगड़ेल बच्चों) को मुफ्त आवास और भोजन मुहैया करवाते हुए, इस कला की शिक्षा प्रदान की। वह अब तक लगभग 350 छात्रों को इस कला की शिक्षा दे चुके हैं। उनके थंगकाओं की बौद्ध धर्म के जाने-माने उच्च कोटि के विद्वान लामाओं द्वारा सराहना की गई और उन्हें एक पहचान मिली है। उनके चित्र, एच.एच. दुदजोम रिंपोचे से संबद्ध उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया के विभिन्न प्रमुख धर्म-स्थलों में देखे जा सकते हैं। उनका नाम कुछ पुस्तकों, जैसे रेफरेंस इंडिया, वॉल्यूम 2, बायोग्राफिकल नोट्स ऑफ मैन एंड वुमेन ऑफ अचीवमेंट ऑफ टुडे एंड टुमोरो, 1993 और एफआई पब्लिकेशन, दिल्ली, इंडिया, 1994 द्वारा प्रकाशित इंडो अमेरिकन, वॉल्यूम-I में भारत के उल्लेखनीय व्यक्ति के रूप में शामिल हैं।

4. श्री वांगचुक ने सिक्किम के विभिन्न मठ जैसे नादक मठ (नामची) पेमायंगत्से मठ (पेलिंग); ताशी चोलिंग मठ (खेचुपेरी); अलाय गुंपा (रावंगला); बूमतर तमांग मठ (नामची) में बौद्ध विशाल भित्ति चित्रों के रूप में अपनी कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। सिक्किम के बाहर, उन्होंने लद्दाख के हानले में ताशी-चोलिंग मठ में बौद्ध भित्ति चित्र उकेरे हैं। उन्होंने नेपाल में स्वयंभू और बौद्ध में चित्रांकन का कार्य किया है, जहां अनुभव के लिए वह सिक्किम के छात्रों को अपने साथ लेकर गए थे। नेपाल के अन्य स्थानों में दुदजोम गुम्पा, तिनचुले गुम्पा, मनांग गुम्पा शामिल हैं। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर सूरजकुंड मेला 2006, भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला, दिल्ली हाट, ट्राइफेड प्रदर्शनियों जैसे विभिन्न बड़े आयोजनों में भाग लिया है। उन्होंने जेद्वा इंटरनेशनल ट्रेड फेयर 2014 और थाईलैंड में मेड इन नॉर्थ ईस्ट इंडिया II में भी भारत और भारतीय कला का प्रतिनिधित्व किया है।

5. श्री वांगचुक को वर्ष 1981 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. नीलम संजीव रेड्डी द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार (हस्तशिल्प) से सम्मानित किया गया था, जिससे उन्हें कला के संरक्षण में सहायता मिली। उन्हें सूरजकुंड मेला 2006 में कला निधि की उपाधि से भी सम्मानित किया गया था। इसके अलावा, 2001 में उन्हें भारतीय उत्कृष्टता पुरस्कार भी प्रदान किया गया है।